गरीबी से बाहर निकालने में अहम भूमिका निभाता आजीविका मिशन

गरीबी का दंश झेलती ग्रामीण महिलाएं अब स्वावलंबी बन रही हैं. इन्हें स्वावलंबी बनाने में झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी यानी जेएसएलपीएस महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है. कल तक दो जून की रोटी के लिए तरसती ग्रामीण महिलाएं आज न सिर्फ अपने पैरों पर खड़ा होकर घर-परिवार चला ही हैं, बल्कि अन्य ग्रामीण महिलाओं को भी प्रोत्साहित कर रही हैं. समूह से जुड़ कर महिलाएं गांव-पंचायत के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं. खेती-बारी से लेकर खुद का व्यवसाय करने में समूह की सदस्यों को समूह से सहयोग मिलता है.

अंजू ने बदली परिवार की आर्थिक स्थिति

अपने खेत में लगी ककड़ी दिखातीं समूह की सदस्य अंजू देवी.

गिरिडीह जिला अंतर्गत डुमरी प्रखंड का एक गांव है चेगरो. इस गांव की महिला कृषक मित्र अंजू देवी समूह के माध्यम से आत्मनिर्भर बन गयीं. अपने परिवार को आर्थिक संकट से बाहर निकालने के कारण अंजू की हर ओर प्रशंसा हो रही है. अब तो अंजू गांव की अन्य महिलाओं की हौसला अफजाई कर रही है. 15 अप्रैल 2016 को दुर्गा आजीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं अंजू आज समूह में सक्रिय सदस्य के तौर पर काम कर रही हैं. अंजू कहती हैं कि पहले परिवार में आमदनी का कोई साधन नहीं था. घर में अगर कोई बीमार पड़ जाये, तो इलाज तक के लिए पैसे नहीं होते थे. महाजन से कर्ज लेकर इलाज कराना पड़ता था. आर्थिक तंगी के कारण बच्चों को बेहतर शिक्षा नहीं दिला पा रही थीं और न ही सही ढंग से खेती कर पा रही थीं. समूह से जुड़ने व बचत प्रक्रिया सीखने के बाद अंजू देवी की जिंदगी में आमूल-चूल परिवर्तन आया. छोटे-छोटे ऋण लेकर घर की आर्थिक समस्याओं का समाधान किया. 20 हजार रुपये का बड़ा ऋण लेकर गाय, बकरी व मुर्गी खरीदीं. शेष राशि से ककड़ी, भिंडी व टमाटर की खेती करना शुरू किया. दूध के अलावा सब्जी बेच कर अंजू ने अपनी आर्थिक स्थिति में बहुत हद तक सुधार किया. पशुओं की संख्या में भी बढ़ोतरी हुई. समूह से लिए ऋण को अंजू धीरे-धीरे चुकता भी कर रही हैं. घर की माली हालत सुधरने पर अब बच्चे अच्छे स्कूल में पढ़ने लगे हैं. खेती-किसानी में अधिक रुचि रखने के कारण कृषक मित्र के कार्यों में काफी दिलचस्पी लेने लगीं. अंजू को कृषक मित्र का प्रशिक्षण भी मिला. अब गांव में कृषक मित्र के रूप में अंजू की पहचान बन गयी. अंजू कहती हैं कि कृषक मित्र के कारण गांव में काफी घूमने का मौका मिला. अंजू अब समूह के माध्यम से ग्रामीणों को विकास के प्रति जागरूक भी कर रही हैं.

मुनिया देवी

प्रखंड डुमरी
जिला गिरिडीह

शौचालय निर्माण से खेरबेड़ा टोले की बदली स्थिति

रांची जिला अंतर्गत अनगड़ा प्रखंड से करीब 35 किलोमीटर दूर है कोनाडीह गांव. इस गांव के ग्रामीण स्वच्छ भारत मिशन के सपने को साकार कर रहे हैं. इसी गांव में एक टोला है खेरबेड़ा. इस टोले की आबादी करीब एक सौ है. सखी मंडल के माध्यम से हर घर में शौचालय का निर्माण किया गया है. कोनाडीह ग्राम संगठन की अध्यक्ष सुखमनी देवी कहती हैं कि जब ग्राम संगठन में शौचालय बनाने का फंड आया, तो सखी मंडल की दीदियों में एक आशा जगी. पहाड़, जंगल व नदी के बीच स्थित खेरबेड़ा गांव में बुनियादी सुविधाएं आज भी नहीं के बराबर हैं. सड़क है नहीं. आवागमन की काफी परेशानी है. कच्ची सड़क होने के कारण शौचालय निर्माण के लिए सामग्रियों को ला रहा ट्रक कई बार फंस चुका है. काफी मशक्कत के बाद इसे टोला तक पहुंचाया गया. काफी जद्दोजहद के बाद टोले के घरों में शौचालय का निर्माण सखी मंडल की सदस्यों ने कराया. विकास महिला समूह, खेरबेड़ा टोली की सचिव चिंता देवी कहती हैं कि जब टोले के घरों में शौचालय नहीं था, तब लोग विवश होकर जंगल की ओर जाते थे. अब जब शौचालय बन गया है, तो ग्रामीण खास कर महिलाओं को शौच के लिए बाहर जाने की जरूरत नहीं है. टोले में शौचालय निर्माण को लेकर सेतु दीदी जेवंती दीदी का भी अहम योगदान रहा है. इसके अलावा नुक्कड़ नाटक व वीडियो के माध्यम से भी शौचालय की उपयोगिता को बताया गया. खेरबेड़ा टोला के ग्रामीणों का कहना है कि जिस तरह से सखी मंडल की दीदियों ने टोले के सभी घरों में शौचालय का निर्माण कराया, उसी तरह बिजली-पानी भी आ जाये, तो यहां के लोगों का भला हो जायेगा.

रूबी खातून

प्रखंड अनगड़ा
जिला रांची

अपने घर में बने शौचालय के पास खड़ी ग्रामीण महिलाएं व समूह की दीदियां.

मीरा देवी को आजीविका ने बनाया स्वावलंबी

पश्चिमी सिंहभूम जिला अंतर्गत मनोहरपुर प्रखंड का एक गांव है बरंगा. इस गांव की मीरा देवी आज आत्मनिर्भर बन गयी हैं. मीरा की कहानी अन्य दीदियों की तरह ही है, जो काफी संघर्ष व समूह के सहयोग के बाद खुद को स्थापित कर पायीं. चार साल पहले मीरा प्रगति स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं. मीरा पहले से खेती करती थीं. इस कारण समूह से जुड़ने के बाद आजीविका कृषि मित्र से खेती-बारी के गुर सीखीं. उन्होंने समूह से 10 हजार रुपये का ऋण लेकर खेती की शुरुआत की. श्रीविधि से मीरा ने धान का उत्पादन किया. उत्पादन बेहतर होने के कारण आमदनी भी अच्छी हुई. 10 हजार रुपये का ऋण चुका कर मीरा ने समूह से 20 हजार रुपये का फिर ऋण लिया. इस राशि से उन्होंने बकरी पालन की शुरुआत की. धीरे-धीरे बकरियों की संख्या बढ़ी और 14 तक पहुंच गयी. इन बकरियों को बेच कर मीरा ने समूह से लिये गये ऋण को समय से चुकता कर दिया और शेष राशि से अपने घर की आर्थिक स्थिति सुधारीं. इसके बाद समूह से उन्होंने बड़ा ऋण करीब 50 हजार रुपये का लिया. इस राशि से उन्होंने मोटर पंप खरीदा और इसका उपयोग खेतों में सिंचाई के तौर पर करने लगीं. अब मीरा सालों भर खेती करती हैं. अच्छा मुनाफा होने के कारण घर की आर्थिक स्थिति भी सुधरने लगी. बेटी को अच्छे स्कूल में पढ़ा रही हैं, वहीं बेटों को काम भी सीखा रही हैं.

आशा तिग्गा

प्रखंड मनोहरपुर
जिला पश्चिमी सिंहभूम

अपने खेत में लगे बैंगन को दिखातीं मीरा देवी.

शराब बेचना छोड़ पानो ने अपनाया सब्जी व्यवसाय

अपनी सब्जी दुकान पर समूह की सदस्य पानो देवी.

खूंटी जिला अंतर्गत रनिया प्रखंड के गढ़सिदम गांव की पानो देवी की जिंदगी समूह से जुड़ कर काफी बदल गयी है. शराब बेचना छोड़ पानो ने सब्जी का व्यवसाय शुरू किया. इस काम में समूह की दीदियों का भी भरपूर सहयोग मिला. पानो ने समूह से ऋण लेकर सब्जी का व्यवसाय शुरू किया और आज उन्हें हर सप्ताह करीब छह सौ रुपये की आमदनी हो जाती है. इससे वो समूह से लिए लोन को भी चुकता कर रही हैं और अपने परिवार का भरण-पोषण भी कर रही हैं. पहले पानो के पास कोई काम नहीं था. दूसरों की जमीन पर खेती-बारी करती थीं, पर आमदनी अधिक नहीं थी. परेशान होकर पानो ने शराब बेचना शुरू किया. इसी बीच वर्ष 2008 में गांव में समूह की कुछ दीदियां पहुंचीं. उन दीदियों ने गांव में समूह बनाने को कहा और 10 महिलाओं को मिला कर गांव में एक समूह बना. पानो देवी भी इस समूह से जुड़ गयीं. समूह की बैठक में अन्य दीदियों ने पानो देवी को शराब बेचना का काम छोड़ कुछ नया करने को कहा. अन्य दीदियों के मार्गदर्शन में पानो देवी ने समूह से पांच हजार रुपये का ऋण लेकर सब्जी का व्यवसाय शुरू किया. खूंटी बाजार से लाकर हर रोज अपने गांव में पानो सब्जी बेचती हैं. इससे उन्हें अच्छी आमदनी हो रही है. अपने व्यवसाय को और बढ़ाने के लिए पानो ने 10 हजार रुपये का ऋण लिया, जिसे ससमय उन्होंने चुकता कर दिया. इस काम में उन्हें उनके पति, बेटा व बेटी भी सहयोग करती हैं. अब तो अपनी जमीन लेकर पानो देवी ने सब्जी की खेती शुरू की है और उससे उपजे सब्जियों को बेच रही हैं. इससे उन्हें दोहरा लाभ मिल रहा है.

अमिता देवी

प्रखंड रनिया
जिला खूंटी

जाल बुनने की मशीन पाकर खुश हुईं दीदियां

पलामू जिला अंतर्गत मेदिनीनगर प्रखंड के सुआ आदर्श ग्राम की महिलाएं आत्मनिर्भर बन गयी हैं. भूसीह टोली के लक्ष्मी व चांदनी सखी मंडल की दीदियों को मछली पालन व्यवसाय को आगे बढ़ाने में जिला मत्स्य विभाग भरपूर सहयोग कर रहा है. जेएसएलपीएस के माध्यम से इन सखी मंडल की महिलाओं को सरकारी योजनाओं से जोड़ा जा रहा है. कुछ दिन पहले लक्ष्मी व चांदनी सखी मंडल की 10 दीदियों को जिला मत्स्य विभाग की ओर से जाल बुनने की मशीन दी गयी. इस कार्य में जिला मत्स्य पदाधिकारी भार्गिवी का काफी सहयोग मिला. उन्होंने भविष्य में मत्स्य पालन से जुड़े विभिन्न प्रशिक्षण के लिए प्रोत्साहित भी किया. जाल बुनने की मशीन पाकर खुश हुईं दीदियां कहती हैं कि समूह से जुड़ने के बाद काफी लाभ हो रहा है. वो कहती हैं कि पहले घर की स्थिति ठीक नहीं थी, लेकिन समूह के माध्यम से जाल बुनने के अलावा सिलाई-कढ़ाई का काम भी बखूबी कर रही हैं. इससे आमदनी भी अच्छी हो रही है.

ममता देवी

प्रखंड मेदिनीनगर
जिला पलामू

पानी बचाने का लें संकल्प

हर साल 22 मार्च को विश्व जल दिवस मनाया जाता है. इस दिन पानी को यथासंभव बचाने का संकल्प लिया जाता है, लेकिन अब हर दिन पानी बचाने की जरूरत है. बिना पानी कुछ नहीं हो सकता. अगर अब भी लोग सचेत नहीं हुए, तो तीसरा विश्व युद्ध पानी के लिए होगा. जल संरक्षण की शुरुआत हमें अपने घरों से ही करनी चाहिए. आजीविका महिला समूह की सदस्य भी पानी की गंभीर समस्या के प्रति लोगों को सचेत कर रही हैं. पानी बचाने के कई उपाय बताये जा रहे हैं. किचन के पानी को यूं ही बर्बाद न कर उसे बागवानी में उपयोग करना चाहिए. पंचायत भवन, विद्यालय, पार्क, गली-मुहल्ले, अस्पताल आदि जगहों पर अगर पानी का पाइपलाइन लिकेज हो, तो तत्काल जल विभाग के अधिकारियों को सूचित करें. पानी के अनावश्यक खर्च को रोकने, वर्षा जल का संचयन, वृक्षारोपण आदि के प्रति लोगों को जागरूक करना चाहिए. पानी के महत्व को बताने के लिए नुक्कड़ नाटक का मंचन भी करना चाहिए.

सुषमा देवी

प्रखंड कांके
जिला रांची

समूह से बदली जिंदगी

पश्चिमी सिंहभूम जिला अंतर्गत हाटगम्हरिया प्रखंड की जानो गगराई आज अपने परिवार के साथ खुशहाल जिंदगी जी रही हैं. पहले जानो के पति मजदूरी करते थे. इससे तीन सदस्यों का भरण-पोषण करना मुश्किल होता था. समूह की जानकारी मिलने पर जानो सूरजमुखी महिला स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं. घर खर्च के लिए पहले वह समूह से दो हजार रुपये का लोन लीं. उसे चुकाने के बाद समूह से 20 हजार रुपये का लोन लीं. इस राशि से खाने-पीने के सामानों की बिक्री बाजार में करने लगीं. इससे उन्हें अच्छा मुनाफा हुआ. आज वह महीने में छह हजार रुपये कमा लेती हैं. इससे ससमय लोन भी चुकता कर रही हैं. आजीविका के माध्यम से एक नयी जिंदगी मिली और आज वह खुशहाल हैं. जानो इसके लिए जेएसएलपीएस को तहे दिल से शुक्रिया अदा करती हैं.

जयंती गगराई

प्रखंड हाटगम्हरिया
जिला प सिंहभूम

बकरी पालन कर हेमवंती बनीं आत्मनिर्भर

पश्चिमी सिंहभूम जिला अंतर्गत हाटगम्हरिया के कुलाबुरू गांव की हेमवंती बकरी पालन कर अपने पैरों पर खड़ा हो गयी हैं. घर में कोई कमाने वाला नहीं होने के कारण हेमवंती को काफी गरीबी झेलनी पड़ी थी. मजदूरी कर किसी तरह घर-परिवार चलाती थीं. इसी बीच जीवन ज्योति आजीविका महिला स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं. समूह की गतिविधियों में सक्रिय रहने लगीं. समूह से ऋण लेकर एक बकरी खरीदीं. धीरे-धीरे पशुओं की संख्या में बढ़ोतरी होने लगी. बकरियों की संख्या एक से बढ़ कर 20 हो गयी. इन बकरियों को बेच कर कुछ आमदनी होने लगी, जिससे घर की माली हालत सुधरने लगी. इन बकरियों के सहारे हेमवंती ने अपनी बेटी को पढ़ाया. आज उनकी बेटी द्वितीय श्रेणी से मैट्रिक पास कर गयी है, वहीं जगन्नाथपुर प्लस टू में इंटर में नामांकन हुआ है. हेमवंती साल में तीन बकरियों को बेचती हैं और उससे हुई आमदनी से अपना परिवार चलाती हैं. अब तो बकरी पालन में भी हेमवंती आत्मनिर्भर बन गयी हैं. गांव की अन्य महिलाओं को भी आत्मनिर्भर होने का गुर सीखाती हैं.

सुखमति गगराई

प्रखंड हाटगम्हरिया
जिला प सिंहभूम